है। आप एक काम्प्रीहैंसिव सर्वे कराइए कि कहां-कहां लोगों को यह सुविधा नहीं मिली है, उनको यह सुविधा दी जानी चाहिए। आपने यह बहुत अच्छा किया कि 160 दिन के बदले 80 दिन कर दिया। देहातों में भी फार्म्स पर काम करने वाली औरतें 80 दिन तो आराम से काम कर लेती हैं। इसमें कोई ऐसा तरीका होना चाहिए जिससे वहां एक रजिस्टर मेण्टेन हो कि जिस औरत मजदूर ने 80 दिन तक काम किया है उसे मेटरनिटी बैनीफिट दिया जाना चाहिए।

मैं इस बात से सहमत हूं कि दो बच्चों तक के लिए मैटरनिटी बैनीफिट में आप ज्यादा से ज्यादा सुविधा कर दें लेकिन दो बच्चों के बाद भी मैटरनिटी बैनीफिट को खत्म नहीं करें बल्कि पहले की अपेक्षा कम कर दें। मैं कहना चाहूंगा कि कम्पलेण्ट्स करने का अधिकार केवल वालेण्टरी एजेंसीज या महिला को ही नहीं होना चाहिए बल्कि कोई इण्डीविजुअल भी करना चाहे, जैसे अखबार का रिपोर्टर है, उसने यह पता लगाया कि इस उद्योग में महिलाओं का शोषण हो रहा है जैसे कंस्ट्रक्शन इण्डस्ट्री है, तो उस इण्डीविजुअल को यह अधिकार होना चाहिए कि वह इस तरह की कम्लेण्ट कर सके और उस पर सुनवाई हो और इस पर अमल हो।

अन्त में मैं कहूंगा कि यह बहुत ही नैक और प्रोग्रेसिव बिल है और सरकार को चाहिए कि इसे पूरे दम लगाकर, पूरी शक्ति लगाकर इम्पलीमैंट कराए, इसको क्रियान्वित करे।

12.52 म० प०

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव तथा सर्वोच्च सोवियत के प्रेसीडियम के अध्यक्ष श्री गोर्बाचोव की यात्रा के बारे में वक्तव्य

प्रधान मन्त्री (श्री राजीव गांधी) : महोदय जैसा कि सदन को मालूम है सोवियत संघ की कम्युनिष्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव और सर्वोच्च सोवियत की प्रीजीडियम के सभापति श्री गोर्बाचोव शांति, निरस्त्रीकरण और विकास संबंध इंदिरा गांधी पुरस्कार लेने के लिए हमारे माननीय अतिथि के रूप में भारत आए थे। राष्ट्रपति गोर्बाचोव ने हमारे विश्व को नाभिकीय हथियारों से मुक्त करने और शांति, सहयोग, सद्भावना और समझबूझ की ताकतों को मजबूत बनाने की दिशा में जो योगदान दिया है, उससे अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में अद्वितीय और गुणात्मक परिवर्तन आया है। उन्हें इंदिरा गांधी पुरस्कार से सम्मानित करते हुए हम एक ऐसे व्यक्ति को अपना आदर भाव व्यक्त कर रहे हैं जो इस बात का प्रतीक है कि वह शांति, प्रगति और समृद्धि को भावपूर्ण रूप से लाने के लिए लालायित है जिसके लिए कि इंदिरा गांधी ने अपना जीवन समर्पित कर दिया था। राष्ट्रपति गोर्बाचोव की यात्रा इस बात की पुनः पुष्टि करती है कि सोवियत सरकार और वहां की जनता उन मूल्यों का अत्यधिक सम्मान करती है जिन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व वाले हमारे स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरित किया था। वे उस दूरदर्शिता का भी सम्मान करते हैं जो जवाहरलाल नेहरू तथा इंदिरा गांधी ने सुदृढ़ और आत्म-निर्भर भारत के लिये दिखाई थी।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव तथा सर्वोच्च सोवियत के प्रेसीडियम के अध्यक्ष श्री गोर्बाचोव की यात्रा के बारे में वक्तव्य

[श्री राजीव गांधी]

महोदय, राष्ट्रपति श्री गोर्बाचोव और मैंने नवम्बर, 1986 में उनकी पिछली भारत यात्रा के दौरान जिस दिल्ली घोषणा पर हस्ताक्षर किए थे, उसमें हमारे दोनों देशों की वह वचनबद्धता निहित थी कि हम विश्व को नाभिकीय युद्ध के खतरे से मुक्ति दिलाना चाहते हैं और नाभिकीय-शस्त्र मुक्त तथा अहिंसक विश्व व्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं। इस वर्ष जून में मैंने संयुक्त राष्ट्र महासभा के तीसरे विशेष अधिवेशन के समक्ष निरस्त्रीकरण के संबंध जो कार्य योजना प्रस्तुत की थी, उसमें विश्व समुदाय को उन ठोस कदमों के बारे में बताया गया था जो दिल्ली घोषणा में निहित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उठाए जा सकते हैं। माननीय सदस्यों को यह जानकर खुशी होगी कि राष्ट्रपति श्री गोर्बाचोव ने हमारी कार्य योजना का समर्थन किया है। भारत और सोवियत संघ इस बात के लिए सहमत हो गए हैं कि नाभिकीय शस्त्रों की होड़ को समाप्त करने, सैनिक समताओं वाली उभरती हुई नई प्रौद्योगिकियों पर नए अंतर्राष्ट्रीय नियंत्रण स्थापित करने तथा नाभिकीय हथियारों का इस्तेमाल करने अथवा उनके इस्तेमाल की धमकी पर प्रतिबंध लगाने से संबंधित एक अन्तर्राष्ट्रीय अभिसमय सम्पन्न करने के निमित्त काम करने के लिए तत्काल कदम उठाए जाने की जरूरत है।

राष्ट्रपति गोर्बाचोव की इस यात्रा से हमें क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर विचारों का आदान-प्रदान करने का एक और अवसर मिला। हम दोनों इस बात पर सहमत थे कि जुलाई, 1987 में उनके साथ मेरी पिछली मुलाकात के बाद से हाल ही के विगत में जिन तनावों और सन्देहों ने विश्व की स्थिति बिगाड़ दी थी उनमें कमी आई है। मध्यम दूरी नाभिकीय बल सन्धि पर हस्ताक्षर होना, अफगानिस्तान के सम्बन्ध में जनेवा समझौते, ईरान-इराक युद्ध बन्द होना तथा दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण अफ्रीका से सम्बन्धित मसलों का बातचीत द्वारा समाधान खोजने की दिशा में हुई प्रगति इस बात की अभिव्यक्ति है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में एक नया युग उभर कर सामने आ रहा है। राष्ट्रपति गोर्बाचोव की निर्भीक और कल्पनाशील पहलकदमियां टकराव के स्थान पर सहयोग, सन्देह के स्थान पर विश्वास और शंका के स्थान पर आशा उत्पन्न कर रही हैं। सोवियत संघ गुट-निरपेक्ष आन्दोलन में भारत की सक्रिय और रचनात्मक भूमिका की तथा शान्ति, निरस्त्रीकरण और विकास को संवर्धित करने के हमारे प्रयासों की अत्यधिक सराहना करता है।

जैसा कि माननीय सदस्यों को मालूम है, अफगानिस्तान की घटनाओं से हमारे क्षेत्र में तनाव बढ़ गया था और यहां तक कि हमारे सुरक्षा वातावरण को भी खतरा पैदा हो गया था। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय की यह आशा रही है कि जेनेवा समझौतों से इस क्षेत्र में शांति और स्थायित्व के नए युग की शुरूआत होगी और अफगान लोग अपने भाग्य का फैसला बिना किसी विदेशी हस्त के स्वयं कर सकेंगे। राष्ट्रपति गोर्बाचोव ने मुझे बताया कि सोवियत संघ अफगानिस्तान में एक व्यापक आधार वाली सरकार की स्थापना का समर्थन तो करता है किन्तु वह इस बात से चिंतित है कि जनेवा समझौतों का बराबर उल्लंघन किया जा रहा है हम आशा करते हैं कि इन समझौतों को शब्द और भावना में पूरी तरह से क्रियान्वयन किया जाएगा ताकि अफगानिस्तान की जनता अपनी शक्ति राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और आर्थिक विकास के कार्यों में लगा सके।

सदन को मालूम है कि सोवियत संघ के साथ हमारे द्विपक्षीय संबंध और मजबूती से सुदृढ़ होते जा रहे हैं। हमने अपनी पिछली बैठकों में जो विभिन्न निर्णय और समझौते किए थे, राष्ट्रपति गोर्बाचोव की यात्रा के दौरान हमने उनके क्रियान्वयन में हुई प्रगति की समीक्षा की।

[ग्रंथालय में रखा गया। देखिए संख्या एल०टी० 6745/88]

भारत में नाभिकीय विद्युत केन्द्र का निर्माण करने।

[ग्रंथालय में रखा गया। देखिए संख्या एल०टी० 6744/88]

शांतिपूर्ण प्रयोजनों के लिए बाहरी अन्तरिक्ष के अनुसंधान, विन्ध्याचल थर्मल विद्युत केन्द्र के दूसरे चरण की स्थापना,

[ग्रंथालय में रखी गई। देखिए संख्या एल०टी० 6742/88]

दोहरे कराधान के परिहार के संबंध में करारों पर।

[ग्रन्थालय में रखा गया। देखिए संख्या एल०टी० 6746/88]

तथा विद्युत परियोजनाओं में आर्थिक और तकनीकी सहयोग संबंधी प्रोटोकाल पर कल हस्ताक्षर किए गए थे। इन करारों और प्रोटोकाल का पाठ सदन की मेज पर रख दिया गया है।

[ग्रन्थालय में रखा गया। देखिए संख्या एल०टी० 6742/6746]

इन करारों से हमारे पहले ही बहुपक्षीय आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग को नई गति और नया आयाम मिलेगा। हमने भारत-सोवियत शिखर वार्ता वक्तव्य पर भी हस्ताक्षर किए जिसका पाठ शांति, मैत्री और सहयोग को सुदृढ़ करने की हमारी समान वचनबद्धता को परिलक्षित करता है। इस वक्तव्य का पाठ भी सदन की मेज पर रख दिया गया है।

[ग्रन्थालय में रखा गया। देखिए संख्या एल० टी० 6747/88]

अध्यक्ष महोदय, मैं यह भी बताना चाहूंगा कि उन अद्वितीय प्रदर्शनों से हमारे संबंध और भी सुदृढ़ हुए हैं जिनसे भारत और सोवियत संघ की जनता गतवर्ष एक दूसरे की प्राचीन, समृद्ध और विवध सांस्कृतिक विरासत से अवगत हुई है।

अध्यक्ष महोदय, सोवियत संघ के साथ हमारी मैत्री समय की कसौटी पर खरी उतरी है। राष्ट्रपति गोर्बाचोव की भारत यात्रा, जो विगत दो वर्षों में उनकी दूसरी यात्रा थी, सोवियत नेताओं और वहां की जनता इस इच्छा का प्रतीक है कि वे इस मैत्री को और सुदृढ़ और व्यापक बनाना चाहते हैं। हम भी उनकी इस इच्छा का स्वागत करते हैं और इन संबंधों का संवर्धन करने के लिए पूर्ण सहयोग देंगे।

12.58 म०प०

प्रसूति प्रसुविधा (संशोधन) विधेयक—(जारी)

अध्यक्ष महोदय : सदन अब प्रसूति प्रसुविधा (संशोधन) विधेयक पर चर्चा जारी रखेगा।

श्री तम्पन थामस।